क्या है अधिकमास कब आता है जानिए इसका पौराणिक आधार

हिंदू कैलेंडर में हर तीन साल में एक बार एक अतिरिक्त माह का प्राकट्य होता है, जिसे अधिकमास, मल मास या पुरुषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। हिंदू धर्म में इस माह का विशेष महत्त्व है। संपूर्ण भारत की हिंदू धर्मपरायण जनता इस पूरे मास में पूजा–पाठ, भगवतभक्ति, व्रत–उपवास, जप और योग आदि धार्मिक कार्यों में संलग्न रहती है।

ऐसा माना जाता है कि अधिकमास में किए गए धार्मिक कार्यों का किसी भी अन्य माह में किए गए पूजा–पाठ से १० गुना अधिक फल मिलता है। यही वजह है कि श्रद्धालु जन अपनी पूरी श्रद्धा और शक्ति के साथ इस मास में भगवान को प्रसन्न कर अपना इहलोक तथा परलोक सुधारने में जुट जाते हैं। अब सोचने वाली बात यह है कि यदि यह माह इतना ही प्रभावशाली और पवित्र है, तो यह हर तीन साल में क्यों आता है? आखिर क्यों और किस कारण से इसे इतना पवित्र माना जाता है? इस एक माह को तीन विशिष्ट नामों से क्यों पुकारा जाता है? इसी तरह के तमाम प्रश्न स्वाभाविक रूप से हर जिज्ञासु के मन में आते हैं। तो आज ऐसे ही कई प्रश्नों के उत्तर और अधिकमास को गहराई से जानते हैं–

हर तीन साल में क्यों आता है

अधिकमास– वशिष्ठ सिद्धांत के अनुसार भारतीय हिंदू कैलेंडर सूर्य मास और चंद्र मास की गणना के अनुसार चलता है। अधिकमास चंद्र वर्ष का एक अतिरिक्त भाग है, जो हर ३२ माह, १६ दिन और ८ घटी के अंतर से आता है। इसका प्राकट्य सूर्य वर्ष और चंद्र वर्ष के बीच अंतर का संतुलन बनाने के लिए होता है। भारतीय गणना पद्धति के अनुसार प्रत्येक सूर्य वर्ष ३६५ दिन और करीब ६ घंटे का होता है, वहीं चंद्र वर्ष ३५४ दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षों के बीच लगभग ११ दिनों का अंतर होता है, जो हर तीन वर्ष में लगभग १ मास के बराबर हो जाता है। इसी अंतर को पाटने के लिए हर तीन साल में एक चंद्र मास अस्तित्व में आता है, जिसे अतिरिक्त होने के कारण अधिकमास का नाम दिया गया है।

मल मास क्यों कहा गया

हिंदू धर्म में अधिकमास के दौरान सभी पवित्र कर्म वर्जित माने गए हैं। माना जाता है कि अतिरिक्त होने के कारण यह मास मलिन होता है। इसलिए इस मास के दौरान हिंदू धर्म के विशिष्ट व्यक्तिगत संस्कार जैसे नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह और सामान्य धार्मिक संस्कार जैसे गृहप्रवेश, नई बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदी आदि आमतौर पर नहीं किए जाते हैं। मलिन मानने के कारण ही इस मास का नाम मलमास पड़ गया है।

पुरुषोत्तम मास नाम क्यों

अधिकमास के अधिपति स्वामी भगवान विष्णु माने जाते हैं। पुरुषोत्तम भगवान विष्णु का ही एक नाम है। इसीलिए अधिकमास को पुरूषोत्तम मास के नाम से भी पुकारा जाता है। इस विषय में एक बड़ी ही रोचक कथा पुराणों में पढ़ने को मिलती है। कहा जाता है कि भारतीय मनीषियों ने अपनी गणना पद्धति से हर चंद्र मास के लिए एक देवता निर्धारित किए। चूंकि अधिकमास सूर्य और चंद्र मास के बीच संतुलन बनाने के लिए प्रकट हुआ, तो इस अतिरिक्त मास का अधिपति बनने के लिए कोई देवता तैयार ना हुआ। ऐसे में ऋषि–मुनियों ने भगवान विष्णु से आग्रह किया कि वे ही इस मास का भार अपने ऊपर लें। भगवान

विष्णु ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और इस तरह यह मल मास के साथ पुरुषोत्तम मास भी बन गया।

अधिकमास का पौराणिक आधार

अधिक मास के लिए पुराणों में बड़ी ही सुंदर कथा सुनने को मिलती है। यह कथा दैत्यराज हिरण्यकश्यप के वध से जुड़ी है। पुराणों के अनुसार दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने एक बार ब्रह्मा जी को अपने कठोर तप से प्रसन्न कर लिया और उनसे अमरता का वरदान मांगा। चुंकि अमरता का वरदान देना निषिद्ध है, इसीलिए ब्रह्मा जी ने उसे कोई भी अन्य वर मांगने को कहा।

तब हिरण्यकश्यप ने वर मांगा कि उसे संसार का कोई नर, नारी, पशु, देवता या असुर मार ना सके। वह वर्ष के १२ महीनों में मृत्यु को प्राप्त ना हो। जब वह मरे, तो ना दिन का समय हो, ना रात का। वह ना किसी अस्त्र से मरे, ना किसी शस्त्र से। उसे ना घर में मारा जा सके, ना ही घर से बाहर मारा जा सके। इस वरदान के मिलते ही हिरण्यकश्यप स्वयं को अमर मानने लगा और उसने खुद को भगवान घोषित कर दिया। समय आने पर भगवान विष्णु ने अधिक मास में नरसिंह अवतार यानि आधा पुरुष और आधे शेर के रूप में प्रकट होकर, शाम के समय, देहरी के नीचे अपने नाखूनों से हिरण्यकश्यप का सीना चीर कर उसे मृत्यु के द्वार भेज दिया।

इसका महत्व क्यों है?

हिंदू धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव पंचमहाभूतों से मिलकर बना है। इन पंचमहाभूतों में जल, अग्नि, आकाश, वायु और पृथ्वी सम्मिलित हैं। अपनी प्रेंति के अनुरूप ही ये पांचों तत्व प्रत्येक जीव की प्रेंति न्यूनाधिक रूप से निश्चित करते हैं। अधिकमास में समस्त धार्मिक, चिंतन– मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से साधक अपने शरीर में समाहित इन पांचों तत्वों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस पूरे मास में अपने धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयासों से प्रत्येक व्यक्ति अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति और निर्मलता के लिए उद्यत होता है। इस तरह अधिकमास के दौरान किए गए प्रयासों से व्यक्ति हर तीन साल में स्वयं को बाहर से स्वच्छ कर परम निर्मलता को प्राप्त कर नई ऊर्जा से भर जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दौरान किए गए प्रयासों से समस्त कुंडली दोषों का भी निराकरण हो जाता है।

अधिकमास में क्या करना उचित

आमतौर पर अधिकमास में हिंदू श्रद्धालु व्रत– उपवास, पूजा– पाठ, ध्यान, भजन, कीर्तन, मनन को अपनी जीवनचर्या बनाते हैं। पौराणिक सिद्धांतों के अनुसार इस मास के दौरान यज्ञ– हवन के अलावा श्रीमद् देवीभागवत, श्री भागवत पुराण, श्री विष्णु पुराण, भविष्योत्तर पुराण आदि का श्रवण, पठन, मनन विशेष रूप से फलदायी होता है। अधिकमास के अधिष्ठाता भगवान विष्णु हैं, इसीलिए इस पूरे समय में विष्णु मंत्रों का जाप विशेष लाभकारी होता है। ऐसा माना जाता है कि अधिक मास में विष्णु मंत्र का जाप करने वाले साधकों को भगवान विष्णु स्वयं आशीर्वाद देते हैं, उनके पापों का शमन करते हैं और उनकी समस्त इच्छाएं पूरी करते हैं।

पारद है जहाँ लक्ष्मी है वहाँ

'पारद' शब्द में पत्र विष्णु, अत्र (अकार) कालिका, रत्रशिव और दत्र ब्रह्मा के प्रतीक है।

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, पारद श्रीयंत्र, पारद कुबेरयंत्र, पारद लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा, पारद पिरामिड, पारद माला, पारद गुटिका या अन्य किसी भी पारद प्रतिमा के रूप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शांति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिये धर्म, अर्थ और काम, मोक्ष, धन, आरोग्य, ज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो, पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन-धान्य से पूर्ण होकर अध्यात्ममय बन जाता है।

जो पारद लिंग का पूजन करता है उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। इसके दर्शन से १०० अश्वमेघ यज्ञ करने, करोड़ों गौ दान करने एवं सहस्त्र मण स्वर्ण दान करने का फल मिलता है। पारे से अधिक गुण वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा।

1. पारद शिवलिंग 1500 रू. से आरम्भ 2. पारद प्रतिमाएं 2100 रू. आरम्भ 3. पारद माला 2500 रू. से आरम्भ 4. पारद श्रीयंत्र 1500 रू. से आरम्भ 5. श्री सुमेरूपृष्ठ पारद निर्मित कुबेरयंत्र 2100रू. से आरम्भ 6. पारद पिरामिड 1100रू. 7. ऑफिस, दुकान, आदि के वास्तुदोष निवारण के लिए विशिष्ट नौ सुमेरू युक्त पारद पिरामिड 2100 रू. 8. पारद पिरामिड लॉकेट 900 रू. (पारद प्रतिमाएं व अन्य सामग्री की न्यौछावर आकार व वजन के अनुसार)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र
'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

व्यापार वृद्धि के विशेष साधन

सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि यन्त्र– व्यापार/व्यवसाय हमारी आर्थिक समृद्धि का आधार है। परन्तु अच्छा व्यापार भी सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही मिल पाता है अन्यथा तो आपने देखा होगा कि इस प्रतिस्पर्धा के युग में सभी एक दूसरे को पीछे धकेलने में लगे हैं। आपने स्वयं देखा होगा कि व्यापार अच्छा चलते–चलते अचानक मन्दा हो जाता है, सम्भव है कुछ लोग व्यापारिक बाधा उत्पन्न करा देते हैं। इस प्रकार के अभिचार प्रयोगों से रक्षा के लिये तथा व्यापार में असीम वृद्धि के लिये 'सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि यंत्र' बहुत लाभदायक है। इसमें लक्ष्मी को आकर्षित करने वाले 13 यंत्रों का संग्रह किया गया है।

पारद लक्ष्मी–अमीर हो या गरीब, लक्ष्मी की आवश्यकता तो सभी को है। आज का युग भौतिक युग है, आज के समय में छोटी–छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिये भी धन की अहम् आवश्यकता है। परन्तु लक्ष्मी है कि इस द्वार से आती है तो उस द्वार से निकल जाती है और कुछ लोगों के पास तो लक्ष्मी आती ही नहीं है। यदि आप चाहते हैं कि लक्ष्मी माँ की आप पर कृपा दृष्टि बनी रहे और आपका परिवार धन–धान्य से परिपूर्ण रहे। आपकी आय में बरकत हो, आपके पास सम्पदा हो, तो आपको लक्ष्मी के स्थायी निवास के लिये अपने घर में प्राण–प्रतिष्ठित व सिद्ध की हुई लक्ष्मी की पारद प्रतिमा स्थापित करनी चाहिये।

नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र लॉकेट– यह तो आप भी जानते हैं कि श्रीयंत्र माँ लक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय यंत्र है। यहां तक कि श्रीयंत्र में साक्षात् लक्ष्मी का निवास माना जाता है। यही कारण है कि घर में लक्ष्मी के स्थायी निवास के लिये श्रीयंत्र स्थापित किया जाता है। हम प्राणियों का जीवन ब्रह्माण्ड में स्थित नवग्रहों से पूर्णतः प्रभावित है, यही कारण है कि उनकी गति व स्थिति का हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। लक्ष्मी की पूर्ण कृपा तथा नवग्रहों के दोषों को दूर करने के लिये विशेष रूप से इस 'नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र लॉकेट' का निर्माण किया गया है। इसको धारण करने से जहां लक्ष्मी की कमी नहीं रहेगी वहीं नवग्रहों के दोष भी समाप्त होंगे।

दक्षिणावर्त्त शंख– धार्मिक दृष्टिकोण से इस शंख को लक्ष्मी का प्रिय आभूषण माना गया है और एक प्रकार से लक्ष्मी का ही स्वरूप माना गया है, अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है, उसके घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास बना रहता है। व्यापारिक दृष्टि से इस प्रकार के शंख को कारखाने में या फैक्ट्री में स्थापित किया जाये तो उसकी दरिद्रता समाप्त हो सकती है और आर्थिक उन्नति होने लगती है। इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय विनाशक कहा गया है और इसके रहने से व्यापार में वृद्धि होती रहती है। आप भी लक्ष्मी के इस प्रिय आभूषण को अपने घर में स्थापित करें और इसका भरपूर लाभ उठायें।

श्री सुमेरुपृष्ठ श्रीयंत्र– श्रीयंत्र अपने आप में अत्यन्त श्रेष्ठ है और आर्थिक उन्नति तथा भौतिक सुख–सम्पदा के लिये तो इससे बढ़कर कोई यंत्र संसार में नहीं है। जैन शास्त्रों में भी इस यंत्र के प्रभाव की प्रशंसा की गई है। इसमें कोई दो राय नहीं कि 'श्रीयंत्र' में स्वतः ही कई सिद्धियों का वास है। योगियों, सन्यासियों, तान्त्रिकों, व्यापारियों, गृहस्थ व्यक्तियों एवं विदेशियों ने एक स्वर में इसकी महत्ता को स्वीकार किया है। आर्थिक उन्नति एवं व्यापारिक सफलता के लिये यह यंत्र बेजोड़ है। उचित प्रभाव के लिये मंत्र सिद्ध, प्राण–प्रतिष्ठायुक्त श्रीयंत्र का स्थापित होना ही पर्याप्त है। जीवन में सुख–समृद्धि के लिये आज ही अपने घर में आपको इसे स्थापित करना चाहिये।

पारद कुबेर यंत्र– जिस प्रकार जल के देवता वरुण देव और रस के देवता सूर्यदेव है, वर्षा के अधिपति इन्द्र हैं, ताप के देवता अग्निदेव हैं, प्राण के देवता वायुदेव हैं, उसी प्रकार धन–सम्पत्ति के अधिपति श्री कुबेरदेव हैं। ये यक्षपति है और समस्त संसार की भौतिक सम्पदा का स्वामित्व इन्हें प्राप्त है। भौतिक सम्पन्नता से अभावग्रस्त, दरिद्रता पीड़ित व्यक्ति जो धन–सम्पदा की, वैभव–विलास की कामना रखते हैं, उनके लिये कुबेर देवता का यह यंत्र उनकी प्रतिमा के तुल्य प्रभावशाली माना गया है। इसकी नियमित रूप से पूजा करने वाला व्यक्ति दरिद्रता के अभिशाप से मुक्त होकर सुखी व सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है। अतः आज ही इस यंत्र को अपने घर में स्थापित कीजिये।

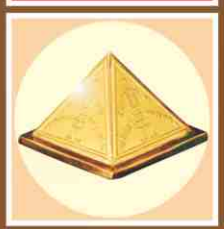

इन्द्राणी यंत्र पिरामिड– इन्द्राणी यंत्र एक सुरक्षा कवच है। यदि व्यवसाय में हानि हो रही हो, निरन्तर व्यवसाय का ह्रास हो रहा हो तो निश्चित रूप से आपको इन्द्राणी यंत्र पिरामिड की स्थापना करनी चाहिये। इस यंत्र पिरामिड के प्रभाव से व्यापार/व्यवसाय में दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की सम्भव है और आप निरन्तर सफलता के पथ पर बढ़ते चले जाते हैं। आय में वृद्धि और स्थायी रूप से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

अन्य सामग्री

सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि के लिये उपरोक्त दिव्य सामग्री के अतिरिक्त गोमती चक्र, व्यापार वर्धक स्फटिक माला, पारद मोती, मोती शंख, एकाक्षी नारियल, लघु नारियल, लक्ष्मीकारक कौड़ियां, नागकेशर, तथा व्यापार वृद्धि कवच भी उपयोगी होते हैं।

सामग्री प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें ⟶

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.) 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

visit us: www.fameandfortune.org E-mail: sale_trinetra@yahoo.in